ऊँ शांति। निराकार भगवानुवाच्य निराकार बच्चों प्रति, निराकार भगवानुवाच्य कि द्वारा, इस लोन लिए हुए तन द्वारा, समझाया गया है। निराकार परमपिता परमात्मा का कोई भी शारीरिक नाम नहीं है। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं, उनका शारीरिक नाम पड़ता है। शरीर छोड़ा तो नाम भी खत्म, फिर जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हैं। बाहर निकलने से शारीरिक नाम रखा जाता है। तो शरीर का ही नाम पड़ता है। उस नाम से बुलाया जाता है। यहाँ फिर निराकार बाप निराकार बच्चों को कहते हैं कि इस शरीर को भूल जाओ। तुम आत्माओं को ये शरीर छोड़ मेरे पास आना है। अभी तुमको इस मृत्युलोक में जन्म नहीं लेना है। वो लौकिक माँ–बाप शारीरिक संबंध बतलाते हैं– ये तुम्हारा फलाना है, ये है और पारलौकिक बाप कहते हैं, हम निराकार हैं, जिसको प०पि०प० कहा जाता है। तुम भी निराकार आत्मा हो, इस शरीर का आधार लिया है। तुम्हारा अपना शरीर है, हमारा ये शरीर उधार पर लिया हुआ है। अभी तुम मुझ बाप को याद करो। मैं तुम आत्माओं का बाबा हूँ। हमेशा ''बाबा''–2 अक्षर लो। कब कोई बच्चे कहते हैं, हमारा मन मूँझता है, मन को खुशी नहीं है। अरे, 'मन' अक्षर क्यों लेते हो, बोलो, बाबा हमको क्यों भूल जाता है? बाबा जो हमको स्वर्ग का लायक बनाते हैं, उनको हम क्यों भूलते हैं? शारीरिक भान छोड़ देही–अभिमानी बनो। बाबा कहते हैं, अब तुमको वापिस आना(जाना) है, मुझे याद करो। निराकार बाबा निराकार आत्माओं को कहते हैं– बाबा–2 करते रहो। ये बाप और माता फिर है गुप्त। फादर के साथ माता तो ज़रूर चाहिए ना। दुनिया में कोई को पता नहीं। बाप इसके द्वारा मुखवंशावली बनाते हैं तब इसको फादर कहते हैं। फिर मदर कहाँ? जगतअम्बा को नहीं कहेंगे। एडम और ईव, आदम–बीबी। अब बीबी कितनी गुप्त है। जगतअम्बा तो निमित्त है सम्भालने लिए; क्योंकि ये मेल होने कारण सम्भाल न सके; इसलिए जगतअम्बा है। उनकी भी फिर माँ ये (ब्रह्मा बड़ी माँ) है। ये सब हैं ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। वो कहते हैं मात–पिता। तो (ये) बाप बैठ समझाते हैं, ये कोई साधु–संत का काम नहीं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते है, माया रावण नरक बनाने लग पड़ती। बाप सुख देते, माया दुख देते हैं। ये है ही सुख–दुख का खेल और है भारत के लिए। भारत हीरे जैसा था, अब कौड़ी जैसा बन पड़ा है। भारत में पवित्र गृहस्थ धर्म था, जिन्हों के ये चित्र हैं। ल०ना० का राज्य था; परन्तु वो कब स्थापन हुआ, ये कोई जानते नहीं। कल्प लाखों वर्ष का कह देते हैं। तुम बच्चों को समझाया जाता है– 5000 वर्ष पहले इन ल०ना० का राज्य था, फिर ल०ना० दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड, 8 चलते हैं, फिर चंद्रवंशी में 12 चलते हैं। डिनायस्टी होती है ना! मुगलों की डिनायस्टी, सिक्खों की डिनायस्टी। बच्चों को समझाया जाता है, 5000 वर्ष पहले भारत में एक ही ल०ना० का राज्य था, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी गवर्मेन्ट थी। वो बाप ही बनाते हैं। भारतवासी माँगते भी ये है। अभी तो राजाई है नहीं, न किंग–क्वीन हैं। ये है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य झणभंगुर का। इसमें कोई सुख नहीं। जितना समय पास होता जाता दुख जास्ती होता जावेगा। उनको रूण्य के पानी मिसल कहा जाता है। शास्त्रों में द्रौपदी और दुर्योधन का एक मिसाल भी है। वास्तव में ऐसे है नहीं। ये सब बातें बैठ बनाई हैं। है ये राज्य रूण्य के पानी मिसल। राज्य मिला है तो और ही डूबते जाते, दुखी होते जाते। ब्रिटिश गवर्मेन्ट के समय इतना दुख नहीं था, बहुत सस्ताई थी। अब तो कितनी महँगाई हर चीज़ की हो गई है। वेद–शास्त्रों आदि सबमें गपोड़े हैं। फैमिन, मूसलधार बरसात, अर्थक्वेक आदि भी सब सामने आवेंगे, मुनष्य खाने के लिए हैरान होंगे। इसको रूण्य के पानी मिसल कहा जाता है। अभी तुम तन,मन,धन भारत को स्वर्ग बनाने स्वाहा करते हो, बाप को मदद करते हो। बाप फिर वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी बन गवर्मेन्ट राज्य स्थापन करते हैं। कौरव पति का है रूण्य के पानी मिसल राज्य। पांडव पति की फिर जयजयकार ... हो जावेगी। हाहाकार के बाद जयजयकार होता है। जो विनाश का साक्षात्कार किया है सो प्रैक्टिकल में इन आँखों

से देखना है। तो बाप बैठ समझाते हैं, तुम अपन को आत्मा समझो। बाबा के बच्चे हैं, बाबा–2 करते (रहो)। मन मूँझता है, मन में खुशी न है, ये 'मन' अक्षर निकाल दो। बाबा को याद न करेंगे तो फिर खुशी कहाँ से आवेगी! अरे, बाबा हमको राजाओं का राजा बनाते हैं, कितनी खुशी होनी चाहिए! अपने आप को न जानने कारण ही दुखी होते हैं। तो 'मन' अक्षर क्यों कहते हो? अरे, तुमको बाप याद नहीं पड़ता, तुम तो बड़े नालायक हो। बाप का(को) भूल जाता है क्या? लौकिक बाप के लिए कब कहते हो क्या, हमको याद नहीं पड़ता है। छोटे बच्चे को भी सिखलाया जाता है– ये माँ है, ये बाबा है। अब बेहद का बाप कहते हैं, मुझे याद करो तो मैं तुमको स्वर्ग में ले जाऊँगा। सिर्फ बाबा का बनना है। बाप कहते हैं मेरी मत पर चलते रहो। बाप को तो पोतामेल भी बताना पड़े ना– क्या धंधा–धोरी करते हो, क्या मिलता है, कितना बचता है। बाप को अपने बच्चों का पता रहता है ना– ये कितनी कमाई करता है। तो बाप को जब बतावेंगे तब तो पता पड़े। बाप तो झट बताते हैं तुमको वैकुण्ठ का मालिक बनाता हूँ। अब तुम्हारे पास क्या है वो बाबा को बताना पड़े। ऐसे नहीं, तेरा सो मेरा, मेरी चीज़ को हाथ न लगाओ। ऐसे भी कैसे चालाक होते हैं! बाबा कहते हैं, मैं तो (दाता) तुमको देने लिए आया हूँ। तुम सब मरने वाले हो, इसलिए भविष्य के लिए अब बनाना है। जितना जो करेंगे तो वैकुण्ठ की बादशाही भी उनको ऐसे मिलेगी। लेन–देन का हिसाब है। एक्सचेंज करते हैं, पुराने के बदले सब नया देते हैं। ये तो फर्स्ट क्लास ग्राहक है। एक हाथ दिओ, दूसरे हाथ लिओ। एक पहाका है ना– सुबह का साँई...। बाप तो एकदम विश्व का मालिक बनाने आते हैं। बाप कहते हैं, ये सब कुछ धन–माल आदि (धूर) में मिल जाना है, उनको छोड़ दो। देह सहित देह के सभी संबंधों को भूलो, अपन को ट्रस्टी समझो। ये सब ईश्वर का दिया हुआ है, उनका ही है। बाकी शरीर निर्वाह अर्थ तो चलाना ही है। बाबा को मालूम होगा तो राय देते रहेंगे। कहते हैं– बाबा, मोटर लूँ। अच्छा, पैसा हो तो भल मोटर लो। मकान बनाना है। अच्छा, भल बनाओ। राय देते रहेंगे। पैसा है तो भल खूब मकान बनाओ, ऐरोप्लैन में घूमो, भल सुख लो। बच्चों को ही मत देंगे ना। कन्या की शादी लिए पूछते हैं, अगर ज्ञान में नहीं चल सकते तो भल कराए दो। बच्चे की शादी करानी है। अगर वो पवित्र नहीं बनता, तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता तो फिर हंस–बगुले इकट्ठे कैसे रहेंगे! बोलो, पवित्र बनो तो रहो, नहीं तो निकलो बाहर। आज्ञाकारी बनना है। बाप हमेशा राइट्स डायरैक्शन देंगे। अगर राँग दिया तो भी रिस्पॉन्सिबल बाप है। बाप तो फिर धर्मराज भी है ना! ये कोई कॉमन सतसंग नहीं है, गॉड फादरली युनिवर्सिटी है। बाप राय देते हैं– बच्चे, स्वर्ग के मालिक बनो, श्रीमत पर चलो, देही–अभिमानी बनो। वहाँ के नाम भी कितने सुन्दर होते हैं। (बसर) मल आदि नाम वहाँ होते नहीं। वहाँ रामचंद, कृष्णचंद आदि नाम होते हैं। श्री का टाइटल भी मिलता है; क्योंकि श्रेष्ठ हैं ना। यहाँ तो भ्रष्ट, पतित हैं, कुत्ते–बिल्ले सभी को श्री–2 का टाइटल देते रहते। कुत्तों को भी श्रृंगार कर नाम रखते हैं। एक ने बिल्ली पाली फिर उनको छेद कर कुंडल पहन दिए। तो बाप समझाते हैं, ये पुरानी छी–2 दुनिया है। ये सब खत्म हो जाना है। अभी तुम मेरी श्रीमत पर चलो। श्रीमत भगवत गीता है मुख्य, बाकी वेद–शास्त्र आदि तो कुछ नहीं है। जिससे धर्म की स्थापना होती है, इसको धर्म शास्त्र कहा जाता है। बाप ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय तीनों धर्म स्थापन करते हैं, फिर इब्राहिम अपना धर्म स्थापन करते, उनका शास्त्र फलाना। अच्छा, वेद किस धर्म का शास्त्र है? कुछ भी पता नहीं। सन्यास धर्म का शास्त्र कोई वेद नहीं है। अगर वेद शास्त्र हैं तो वो ही पढ़ें, फिर गीता क्यों उठाते? क्रिश्चियन लोग सयाने हैं, दूसरे धर्म का शास्त्र कब नहीं लेंगे। भारतवासी तो सबको गुरु करते रहेंगे, कुत्ते–बिल्ले सब गुरु, खुद भी स्त्री का गुरु। स्त्री को कहा जाता है, तुम्हारा पति, ईश्वर, गुरु है, उनकी मत पर चलना है। पहले तो उस(ने) ज़हर का प्याला पिलाया। अब ये पतियों

(का) पति कहते हैं, खबरदार रहना, कब विख न पीना। विख पिया तो फिर स्वर्ग के मालिक न बन सकेंगे। ये है ज़हर, उनका नाम न लो। इससे तो बिच्छू–टिंडन निकलते हैं। शास्त्रों में फिर लिखा है, शंकर पार्वती के पिछाड़ी फिदा हुआ, फिर उससे बिच्छू–टिंडन पैदा हुए। अब शंकर–पार्वती की तो बा(त) ही नहीं। वास्तव में तुम सब पार्वतियाँ हो। अमरनाथ शिवबाबा अमरकथा सुनाते हैं, फिर तुम अमरलोक के मालिक बन जाते हो। अमरलोक, मृत्युलोक बनता है, फिर मृत्युलोक, अमरलोक बनता है। अमरनाथ तुमको अमर कथा सुना रहे हैं। अमरकथा कहो, सत्य नारायण की कथा कहो, बात एक ही है। उन्होंने कितनी कथाएँ बनाए दी हैं; जैसे मंदिर भी अनेक बनाए हैं। गोरे कृष्ण का मंदिर अलग, साँवरे कृष्ण का मंदिर अलग। पैसा फिर वहाँ भी रखेंगे तो वहाँ भी रखेंगे। ढेर मंदिर बने हुए हैं। भारत को बुत प्रस्त कहा जाता है। ब्लाइंड फेथ, कोई का पता नहीं। सिक्ख लोग झट बतावेंगे, गुरुनानक को इतना समय हुआ जबकि सिक्ख धर्म स्थापन किया। भारतवासी तो अपना धर्म ही हिन्दू कह देते। ये है नॉनसेंस। हिन्दू धर्म तो कोई आदि सनातन नहीं है, इनको तो भारत कहा जाता है। यदा–2 हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारत लिखा है, भवति हिन्दुस्तान तो नहीं है, तो हिन्दू धर्म कैसे होगा! इन जैसे कोई नहीं। सन्यासी–उदासी भी नालायक हैं। (इन)से पूछो, भगवान कहाँ है? कहेंगे, भगवान तो ब्रह्म है। अरे, ब्रह्म अथवा तत्व में तो तुम आत्माएँ रहती हो, वो फिर भगवान कैसे हो सकता? ये है सन्यासियों की भूल और फिर कह देते– अहम् ब्रह्मास्मि, हम माया के मालिक हैं। अरे, रचना को माया थोड़े ही कहा जाता, माया 5 विकार हैं। धन को सम्पत्ति कहा जाता है। सम्पत्तिवान भव, आयुष्मान भव, अगर कहे माया भव तो गोया 5 विकार भव हो गया। अर्थ समझना है ना! निराकार बाप आकर निराकार आत्माओं को समझाते हैं इन ऑरगन्स द्वारा। ये ऑरगंस इसकी आत्मा की प्रोपर्टी है, मैं लोन लिया हुआ हूँ। जैसे ब्राह्मणों को बुलाया जाता है, घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं। तो दो आत्मा हुई ना! घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बन्द हो जाता है। तो आत्मा प्रवेश कर सकती है ना! बाप कहते हैं, आधा कल्प से तुम मुझे पुकारते आए हो, भगवान आए कर फिर से मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा दो। अब बाप तो आए हैं। जो श्रीमत पर चलेंगे वो श्रेष्ठ बनेंगे। श्री माने श्रेष्ठ। अब ये है नई बातें। बाप और तुम बच्चे हो। कोई पूछते हैं, ये मकान किसने बनाया है? अरे, यहाँ माता–पिता और बच्चे हैं तो बच्चों ने बनवाया है। बहुत ढेर बच्चे हैं। वास्तव में तुम भी बच्चे हो; परन्तु तुम जानते नहीं हो। क्या तुम प०पि०प० की संतान नहीं हो? प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद नहीं हो? तो ब्रह्माकुमार–कुमारी ठहरी ना! वर्सा शिवबाबा से मिलता है, शिवबाबा बनवाए रहे हैं। भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा के लिए, भारत को स्वर्ग बनाने वाले पर तुम लोग टैक्स लगाते हो! फिर सुनकर चुप हो जाते हैं। वास्तव में तुम भी बच्चे हो।

बाबा ने समझाया ना, जब कोई 5–6 इकट्ठे आए तो हर एक को अलग–2 बिठाना चाहिए; जैसे पाकिस्तान में तुम अलग–2 बिठाते थे। अलग समझाने से झट रग का पता पड़ेगा। फार्म भराना है; क्योंकि हर एक की बीमारी अलग है। सर्जन एक–2 को बुलाए कर नब्ज देख फिर दवा देते हैं। तो पहले–2 निश्चय कराना है, हम आत्मा हैं। आत्मा ही सुनती है, आत्मा ही पतित बनी है। आत्मा को निर्लेप कहना, ये तो झूठ बात है। आत्मा जैसे कर्म करते हैं वैसा फल मिलता है। तो आत्मा ही हिसाब–किताब पावेंगे ना! कोई बहुत साहुकार बनते हैं, कोई गरीब बनते हैं। कहते हैं ना, इनके कर्म ऐसे किए हुए हैं। अभी बाबा (ह)मको कर्म ऐसे अच्छे सिखलाते हैं जो 21 जन्म हम सुख में रहेंगे। कर्मों की गति है ना! सतयुग में तो कर्म, अकर्म हो जाता, विकर्म कोई होता नहीं। विकर्म कराने वाली माया ही नहीं होती।

राजधानी स्थापन होती है तो ज़रूर तुम वर्सा तो पावेंगे ना। कर्मातीत अवस्था को पाना है। जन्म–(जन्मांतर) के पाप सिर पर है। गंगा स्नान वा जप–तप आदि करने से विकर्म विनाश नहीं हो सकता, विकर्म विनाश योग अग्नि से ही होते हैं। अंत में सबका हिसाब–किताब चुक्तू होगा नम्बरवार। चुक्तू न होगा तो सज़ा खानी पड़ेगी। चुक्तू करना है बाप की याद से। याद नहीं करते हैं तब आत्मा (मुँझाती) है। बाप कहते हैं, मेरे को याद नहीं करेंगे तो माया वार करेंगे। जितना हो सके याद करो, कम से कम (8) घण्टे तक याद रहेंगे तो तुम पास हो जावेंगे। चार्ट रखो। तूफान तब आते हैं जब अपन को आत्मा समझ बाप को याद न करते हो। गाते हैं सिमर–2 सुख पाओ। अंदर सिमरण है, चुप रहना है। राम–2 वा शिव–2 कहना नहीं है। याद से तुम्हारे कलह–कलेश मिट, निरोगी बन जावेंगे। सीधी बात है, बाप को भूलने से ही माया के थप्पड़ लगते हैं। बाप कहते हैं, रहो भी भल गृहस्थ व्यवहार में। कदम–2 पर बाबा से (राय) पूछते रहो, कहाँ पाप का काम न हो जाए। कन्या ज्ञान में न आती है तो उनको देना ही पड़े। बच्चा अगर पवित्र नहीं रह सकता, अपना कमाए सकते हैं, तो जाए शादी करे, नहीं तो बोलना है, अपनी कमाई कर फिर शादी करो, फिर हमारा कनेक्शन न रहेगा। नहीं तो बहुत हँगामा कर देते हैं। बाप से मिल्कियत पर बड़ा झगड़ा कर देते हैं। बाप को बतलावेंगे तो बाबा मदद भी देंगे। पूरा समाचार नहीं देते हैं वो हुए सौतेले। मातेले तो ज़रूर बतावेंगे। बाप को समाचार न देंगे तो बाप कैसे जाने! (उ)नको फिर कुछ पूछना होता है तो संदेश द्वारा पूछते हैं– ये बात कैसे है? यहाँ तुम्हारा चेहरा हर्षितमुख होगा तब तो सदा हर्षितमुख रहेंगे। बिरला मंदिर में ल०ना० का कितना फर्स्ट क्लास चित्र है; परन्तु जानते नहीं कि ये कब आए थे, अभी वो भारत का राज्य कहाँ गया। तुम जाए समझाए सकते हो, ल०ना० की बायोग्राफी का पता नहीं तो बाकी मन्यू(मंदिर/मूर्तियाँ) बनाकर क्या किया! दिन–प्रतिदिन कलहयुग होता जाता है। भारत फिर भी कंगाल बना है। इतने वेद–शास्त्र पढ़ते, माथा मारते भारत कौड़ी तुल्य बन पड़ा है। फिर भक्ति से क्या हुआ, दुर्गति ही हुई ना! पहले थी सतोप्रधान अव्यभिचारी भक्ति, फिर (बाद) में व्यभिचारी रजो, तमोप्रधान भक्ति होती है। कुत्ते–बिल्ले सबको भगवान कह देते। आगे तो बेअंत कहते थे। अभी कहते, सब ईश्वर ही ईश्वर हैं। इसको तमोप्रधान कहा जाता है। तो ऐसे नहीं कहना चाहिए, हमारा मन नहीं लगता है। ये तुम क्या कहते हो! बाप को भूलने से ही ये हाल होता है। बाप को याद करो तो खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। बाप को याद करने से बड़ी भारी कमाई है! सारी रात बाप को याद करो। नींद को जीतने वाले बनो। बाप को याद करते–2 कई बच्चियाँ ध्यान में चली जाती हैं। गाते आए हैं– बलिहार जाऊँ, वारी जाऊँ, अब बाप कहते हैं– मैं आया हूँ तो मामेकम् याद करो ना! मेरी आत्मा का बाप वो है, उनको याद करना है। इनसे ममत्व मिट जाना चाहिए। नष्टोमोहा बन एक के साथ बुद्धि लगानी है, तो पक्के हो जावेंगे। मुझे अब नए घर जाना है, पुराने घर से क्या ममत्व रखें! नया मकान बनाया जाता है तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना! बाप कहते हैं, देह सहित सब कुछ ये पुराना है। अब बाप और वर्से को याद करो। इस पढ़ाई से हम प्रिंस–प्रिंसेज़ बनेंगे सतयुग में। सेकेण्ड में बाबा प्रत्यक्ष फल देते हैं। ये है प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने का कॉलेज, प्रिंस–प्रिंसेस का कॉलेज नहीं। यहाँ बनना है, फिर प्रिंस के बाद राजा तो ज़रूर बनेंगे। अच्छा, बापदादा, मीठे माँ का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ